BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

विद्यालय में अनुशासन

May 2009

प्रायः अभिभावकों द्वारा विद्यालय का चयन करते समय यह देखा जाता कि विद्यालय का अनुशासन कैसा है, विद्यालय का प्रिंसीपल कितना सख्त है व विद्यालय में कितनी सख्ती। प्रत्येक स्कूल अभिभावकों की इस अपेक्षा की कसौटी पर खरा उतरने की कोशिश करता है और अच्छे अनुशासन के लिए अच्छी से अच्छी नीति बनाता है, और बच्चों को उनका अनुपालन करना होता है, उनका पालन हो रहा है या नहीं इसके लिए टीचर्स को गार्ड की तरह पहरा देना होता है। बच्चों से अपेक्षा की जाती है वे कक्षा में बिल्कुल शांत रहे, यदि विद्यालय में पूर्ण शांति है व केवल अध्यापक बोल रहा है तो विद्यालय एक अच्छा विद्यालय माना जाता है। बच्चों को चाहकर भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति नहीं होती जैसे अपनी खुशी को उछल कर व्यक्त करना। यदि जो पाठ पढ़ाया जा रहा है उसमें कुछ ऐसा आ गया कि वे सब खूब हंसना चाहते हैं, तो अनुशासन की दुहाई देकर उन्हें यह सब नहीं करने दिया जाता। इस तथ्य से अनभिज्ञ कि कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक व विद्यार्थियों के बीच अर्न्तक्रिया (Interaction) विषय को अच्छी तरह से समझने के लिए आवश्यक है, वह अध्यापक अच्छा समझा जाता है जिसकी कक्षा में पिनड्राप शान्ति हो। यहाँ तक कक्षा एक से पाँच तक के विद्यार्थी, जिनके पास अध्यापक, के हर एक लाइन पढ़ाने के बाद बहुत से प्रश्न होते हैं, अपनी बात टीचर तक नहीं पहुँचा पाते, क्योंकि ऐसा करने पर कक्षा में शोर होता है। वह अपना बाल सुलभ व्यवहार कर ही नहीं पाते क्योंकि उन्हें अनुशासन में जो रहना है। छुट्टी की घंटी बजी, वे बस्ता लेकर भागना चाहते हैं पर जब टीचर भागने दे। वे उस आनन्द से वंचित है जो उन्हें कक्षा में भागने से मिलता क्योंकि उन्हें अनुशासन में रहना है। क्या हम इसे ही अनुशासन कहेंगे, यदि यही अनुशासन है और विद्यार्थी अनुशासित तो स्कूल से बाहर आते ही या विद्यालय में ही मौका मिलते ही विद्यार्थी क्यों अनुशासन हीन तो जाते हैं? वही विद्यार्थी जो विद्यालय में 06 घंटे अनुशासित रहता है जिसका कि विद्यालय दावा करते हैं, घर आते ही अनुशासनहीन क्यों हो जाता है ? अभिभावकों की अधिकतर शिकायत होती है कि उनका बच्चा घर पर उनका कहना मानता ही नहीं और शरारतें करता रहता है।

आये दिन विद्यार्थियों के अनुशासन हीनता के अलग–अलग तरह के, कारनामें अखवारों में पढ़ने को मिल जाते हैं। कई तरह के व दंड के प्रावधान के बावजूद विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता बढ़ती ही जा रही हैं।

अभी कुछ समय पूर्व मुझे पता चला कि एक स्कूल में एक छात्रा को जब उसके खिलाफ कुछ आपत्तिजनक शिकायत मिली तो स्कूल से निकाल दिया। यह वही छात्रा थी जिसे बाल दिवस पर कक्षा की सर्वोत्तम छात्रा का पुरस्कार मिला था। नवम्बर में पुरस्कार मिला और जनवरी में छात्रा को निकाल दिया। विद्यालय ने जरा भी कोशिश नहीं की कि छात्रा को सुधारा जाय। अनुशासन के नाम पर इस प्रकार की

सख्त कार्यवाही विद्यालय के नाम हेतु बच्चों में सुधार कम अपराधी प्रवत्ति अधिक पैदा कर रही है। यही कारण है अपराध बड़ता ही जा रहा है। मैंने एक भी विद्यार्थी ऐसा नहीं देखा जिसे विद्यालय से निकाला गया हो और वह सुधरा हो। यह एक कटु सत्य है कि समाज में अपराघ विद्यालयों की असफलता व विफलता का ही परिणाम है। अच्छे अनुशासन का दावा करने वाले किसी भी विद्यालय के पास विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता या आपराधिक प्रवत्ति को रोकने के लिए किसी न किसी प्रकार के दंड या विद्यालय से निष्कासन के अतिरिक्त कोई नीति या योजना नहीं होती है।

अनुशासन है क्या और विद्यार्थी अनुशासनहीन क्यों हो जाते हैं? यह विचारणीय प्रश्न है। अनुशासन वह है जो स्वयं का स्वयं पर शासन है जिसमें किसी भी प्रकार के वाह्य बल जैसे नियम, कानून या दंड के भय की आवश्यकता नहीं पडती है। जहाँ नियम, कानून या दंड के भय की आवश्यकता पड़ती है वह अनुशासन नहीं शासन है। दंड के भय से स्थापित अनुशासन अस्थाई होता है। यदि विद्यार्थियों को स्वाभाविक रूप से अनुशासित करना है तो हमें अनुशासनहीनता का कारण ढूढ़ना होगा। किसी न किसी प्रकार का असन्तोष या दिशाहीनता विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता का मुख्य कारण है। विद्यालयों में विद्यार्थियों को दंड के बल से शारीरिक रूप से अनुशासित करने का प्रयास किया जाता है किन्तु मानसिक रूप से अनुशासित करने के लिए विद्यालयों के पास कोई योजना नहीं होती। आज कल के व्यस्त समय में जब माता पिता दोनों काम काजी हैं उनके पास अपने बच्चे के लिए समय नहीं है। विद्यालय में शिक्षक व प्रिंसीपल एक विशेष दूरी बनाऐ रखने के लिए विद्यार्थियों से भावनात्मक रूप से जुड नहीं पाते हैं फलस्वरूप विद्यार्थियों को न घर में न विद्यालय में प्यार व देखभाल (केयर) का अनुभव होता है। यही कारण है वे अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए अनुशासनहीनता की हरकतें करते हैं और यह कुछ ही विद्यार्थियों के साथ होता है। जिन्हें घर पर माता पिता का पूर्ण व समुचित प्यार समय व देखभाल मिलती है उनमें अनुशासनहीनता की समस्या नहीं।

आज विद्यार्थी को आवश्यकता है कि उसे सुना जाय। उसकी आवाज को दबा नहीं दिया जाय अन्यथा कभी न कभी वह आक्रोश बनकर किसी न किसी रूप में निकलेगा।यह ढूढंना पड़ेगा कि उसके असन्तोष का कारण क्या है ? वह माता पिता से क्या चाहता है ? वह विद्यालय से क्या अपेक्षा रखता है ? यदि यह पता लगा कर हम उसकी समस्याओं को दूर करें तो वह कभी भी अनुशासनहीन नहीं होगा। विद्यार्थी को लगे उसके माता पिता उसका

कितना ध्यान रख रहे है उसका विद्यालय उसके लिए कितना कुछ कर रहा है वह स्वयं ही विद्यालय का एहसानमंद हो कि उसके लिए विद्यालय में कितना कुछ किया जा रहा है। तब वह कभी भी किसी गलत तरह से शिक्षकों को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश नहीं करेगा।

विद्यालय में पढ़ाई के अतिरिक्त खेल इत्यादि की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। खेलों का विद्यार्थी को मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने में बहुत बड़ा योगदान है। यदि पढ़ाई लिखाई विद्यालय का शरीर है तो खेल संगीत कला व क्राफ्ट विद्यालय की आत्मा। हम विद्यालयों में शरीर पर ही ध्यान दे रहे हैं किन्तु आत्मा

की उपेक्षा कर रहें हैं। विद्यालयों में अभिभावकों को खुश करने के लिए पढ़ाई की ओर तो ध्यान दिया जाता है किन्तु खेल, संगीत, की उपेक्षा की जाती है, यही कारण है कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है और उसकी शक्ति का सही उपयोग नहीं हो पाता है जो जरा सी भी चूक हो जाने पर अनुशासनहीनता में तब्दील हो जाता है।

वह विद्यालय अनुशासन में उत्तम माना जाय जहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी घर पर भी बिना दंड के भय के अनुशासित रहें और यह तब तक सम्भव नहीं है जब तक वह मानसिक रूप से

अनुशासित नहीं। दण्ड और बन्धन बच्चे की मानसिकता को रूग्ण करते हैं उन्हें बन्धन की नहीं उन पर एक नजर की आवश्यकता होती है।

अतः विद्यालयों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को मानसिक रूप से अनुशासित करने वाले कार्यक्रम विद्यालय में चलायें। उन्हें समुचित खेलों की सुविधा मिले। योग की कक्षायें चलायी जाँय। उनकी हर आवश्यकता का ध्यान रखा जाय, विद्यालय में Career counseling समय – 2 पर करवायी जाये ताकि वे अपने कैरियर का चुनाव कर सके और अपनी शक्ति व क्षमता को अपने भविष्य को सुन्दर व स्वस्थ बनाने में लगाये। उन्हें एक दिशा की आवश्यकता है। यदि विद्यालय यह कार्य कर दे तो किशोरावस्था से जुड़ी सारी समस्याओं का स्वयं ही निदान हो जायेगा और यही विद्यार्थी आगे चलकर एक सुरक्षित व स्वस्थ समाज का निर्माण करेगें और यह विद्यालय का स्वस्थ समाज के निर्माण में एक बहुत बड़ा योगदान होगा।

श्रीमती रजनी कान्ता बिष्ट

प्रधानाचार्या
बी॰ एल॰ एम॰ एकेडमी